

राजस्थान रे जन जागरण में संतो रौ योगदान

डॉ. भीमराज निर्मल

प्रधानाचार्य (हिन्दी)

रा. उ. मा. विद्यालय कबीर नगर

जोधपुर, राजस्थान (भारत)

ईमेल - dr.brnirmal@gmail.com

सारांश:

भारत री धरती में कैई मोटा-मोटा संत वहीया जिकौ आपरा उपदेशां सूं अठा रा लोगां रौ लोक अर परलोक दोनूं ई सुधारियौ, वारौ जीवण संवारियौ अर वारां जीवण में भगती रा बीज बोया। राजस्थान वीरां रै साथै साथै संतो अर भगतों री भोम ई हैं। अ संत आपरी वाणी अर उपदेशां सूं अठा रा लोगां नै चेताया हैं, वारौ भ्रम तोड़ियौ हैं अर समाज सुधार करियौ हैं। राजस्थानी लोगां रै जीवण में फैल्योड़ा अंधारा नै आपरे ग्यान रै परगास सूं बारै काडियौ। अँड़ा अलेखूं संत वहीया जिकौ आपरै ग्यान रै परकास नै फैलायौ अर समाज में फैल्योड़ा अग्यान रूपी अंधारा नै मेटियौ। भगती भाव रा बीज रोपिया। गुरु री अर सत्संग री मैमा बतायी। वारै प्रभाव सूं राजस्थानी समाज वास्तव में व्यापक स्तर माथै जागौ अर लोग मिनखपणै सूं जीवण बीतावण लागा। अ संत जन समाज में फैल्योड़ी कुरीतियां अर बुराईयां नै मेटण में आपरौ पुरौ जीवण होम दियौ। लोगां रै जीवण में बसियोड़ा अंध-विस्वास ने बारै काडण रौ अर सामाजिक कुरीतियां अर बुराईयां ज्युं - बाळ विवाह, बहु विवाह, अणमेळ ब्याव, सती परथा, परदा परथा, छुआछूत, ऊंच-नीच, जात-पांत अर भेद-भाव आद ने मेटण रौ भरसक परयास करियौ।

कैयौ ई गियौ हैं कै- संत मिळिया इतना टळै, काळ जाळ जम चोट।

सिस निवाया गिर पडै, लख पापां री पोट।।

कुंजी शब्द : रिसी, भगती, मरयादा, संत, परदेस, परगास।

प्रस्तावना

भारत सदियों सूं रिसी मुनियों री धरती रैयौ हैं। अठै कैई मोटा-मोटा संत वहीया जिकौ आपरा उपदेशां सूं अठा रा लोगां रौ लोक अर परलोक दोनूं ई सुधारियौ, वारौ जीवण संवारियौ अर वारां जीवण में भगती रा बीज बोया। बौद्ध काल में आपाणों देस भारत सोना री चिड़िया कैवावतौ। लोगां में खुशहाली ही। लोग मा' पुरुषों रा थरपियोड़ा चारु पुरुसारथों ने पावण रा जतन करता। लोगां रौ जीवण भगती भाव में डुबोडौ हौ। लोग मर्यादित हा, मतलब हर काम मरयादा में रैय' र करता हा। समाज में बड़ौ रौ आदर अर लुगाईयां री इज्जत ही। जुद्व ई व्हैतौ पण जुद्व करण रा नियम बणियोड़ा हा। लोग औरतां माथै हाथ नीं उठावता, निहत्था माथै वार नी करता। जुद्व सिरफ दिन में इज होवतौ, रात में जुद्व नी व्हैतौ अर सेंसू मोटी बात निरदोसां ने नी मारता। पण विदेशी हमलावर अठै आय' र इण परम्परा ने तोड़दी। बै हिया-दिया बायरा हा। बारै वास्तै अ नियम कायदा कीं मायनो नी राखता। बै पासविक प्रवर्ति रा हा। बां नै निरदोसां ने मारणा में अर कत्ले आम मचावणा में घणों मजौ आवतौ। तुर्क धारमिक दीठ सूं घणा कट्टर हा। बांनै दूजा धरमां री कट्टर नी ही, बै मुसलमाना रै अलावा सेंगा ने काफर इज समझता हा। बै हमलावर अठै आय' र धार्मिक जागावां नै तोड़ण लागा। बौद्ध धरम री पढाई रा ठिकाणा तौ पुण्यमित्र शुंग रै काल में ई भागवत धरम रै बढावै रै लारै घणा ई टूटा। अर पछै तुर्क ई ओ इज काम करियौ। बख्तियार खिलजी जैडौ धारमिक कट्टर अर नीच शासक नालन्दा विश्वविद्यालय नै जळा' र भस्म कर दियौ। लोगां रा जबरन धरम बदळीजण लागा। जकौ धरम नी बदळता वांनै अ जिन्दौ नीं छोड़ता। लुगाईयां री इज्जत खराब करण लागा। अँडी परिस्थिति में जदैं लोगां रौ जीवणौ हराम होय गियौ, बांनै समझ में नी आयौ बै करे तो कांई करै। लोगां रौ भगवान सूं भरोसौ उठण लागौ, लोग नास्तिक बणन लागा। समाज में अवैवस्था अर अराजकता फैलण लागी। जणां संत लोग जकौ ग्यान अर गुणां री

खाण हा आगे आया, लोगों ने सही रस्तों दिखायों अर लोगों ने मरणें सूँ बचाया। संत लोगों ने धीरज बंधायों अर आपरी वाणी रें मारफत कैयों-

रामजी रौ राख भरोसौ भाई
जे थूं राखै राम भरोसौ
थारै कमी नी रेवै कांई
रामजी रौ राख भरोसौ भाई

संत लोगों ने भगती भाव कांणी मोड़िया। हमलावरां रौ सामनो करण री हिम्मत दीवी अर आपरौ धरम नी बदळण री बात कैयी। इण तरै उण जमाना में संत लोग पूरा देश रा लोगों ने जगाया। बुरा लोगों अर बुराई रौ हिम्मत सूँ मुकाबलौ करण री सगती दीवी।

पूरा देश में भगती री लैर चाल पड़ी ही। दूजा परदेसां री जियां राजस्थान में ई संत लोग आपरौ फरज निभावण में, मतलब जन-जागरण में लारै नी रैया। राजस्थान में जिता संत वहीया सायद ई कोई दूजा परदेस में वहीया व्हेला। ज्युं कर्नल जेम्स टॉड राजस्थान रें लोगों री वीरता रें बारें में कैयों हैं कै राजस्थान में कोई छोटो सो राज्य ई अेड़ौ नी है जिणमें थरमोपोली जैड़ी रणभूमी नीं व्हे अर न कोई अेड़ौ नगर है जठे लियोनिडास जेड़ौ वीर मिनख पैदा नीं व्हीयों व्हे। आ र आ बात राजस्थान रा संतो मातै भी फिट व्हे। राजस्थान रा हर गांव अर ढाणी में कोई न कोई संत जरूर व्हीयों हैं। राजस्थान वीरां रें साथै साथै संतो अर भगतों री भोम ई है। अै संत आपरी वाणी अर उपदेसां सूँ अठा रा लोगों ने चेताया है, वारौ भरम तोड़ियों हैं अर समाज सुधार करियों हैं। राजस्थानी लोगों रें जीवन में फैल्योड़ा अंधारा नै आपरे ग्यान रें परगास सूँ बारै काडियों। अै संत जन समाज में फैल्योड़ी कुरीतियां अर बुराईयां नै मेटण में आपरौ पुरौ जीवन होम दियौ। लोगों रें जीवन में बसियोड़ा अंध-विस्वास ने बारै काडण रौ भरसक परयास करियों। सामाजिक कुरीतियां अर बुराईयां ज्युं - बाळ विवाह, बहु विवाह, अणमेळ ब्याव, सती परथा, परदा परथा, छुआछूत, ऊंच-नीच, जात-पांत अर भेद-भाव आद ने मेटण रौ भरसक परयास करियों।

आं मांय सूँ खास रूप सूँ अै संत हा - कबीर साहेब जी, दादूदयाल जी, सुन्दरदासजी जी, दय्यालदास जी, रायलदास जी, सेवादास जी, गिरधरदास जी, भोळाराम जी, घमण्डी राम जी, आसाराम जी, लुम्बाराम जी, किसनदास जी, दरियावदास जी, रणछाराम जी, परमानन्द जी, देवाराम जी, उमाराम जी, बिजळदास जी, खेताराम जी, मीरां बाई, रामीबाई, दयाबाई, रैदास जी, बाजिंद जी, पलटूदास जी, संग्रामदास जी, मौजी साहेब, धरमीदास जी, मोती साहेब, जुगती साहेब, रामदास जी, गरीबदास जी, रामनाथ जी, देवीनाथ जी, जाम्भोजी, राजाराम जी अर सुखरामदास जी ऐड़ा नामी संत हा।

संत कबीर आपरी वाणी रें मारफत लोगों ने जगाया। बरामणां नै भेदभाव करणां री वजै सूँ कैयों-

बामण बामण बामणी का जाया।
तू कोई और रस्ते से क्युं नहीं आया।।

अर तुरकां नै कैयों-

कंकड़ पत्थर चिणाय के, मस्जिद दी बनाय।
तां चढ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

संत रामदासजी कैयों कै भगवान रौ नाम रटणा सूँ अर आछा करम करणा सूँ इज थांरी सद्गति व्हे सकै। बै कैयों -

राम नाम रटते रहौ, जब लग घट में प्राण।
कबुहक दिन दयाल के, भनक पड़ेगी कान।।

संतजन राजस्थान रा लोगों ने हर तरै सूं चेताया। अक संत वहीया वाजिंद जी म' राज। बै कैयौ कै -

बाजिंदा बाजी रची, जेसै सेमल फूल।

चार दिनां री चांदणी, अंत धूल री धूल।।

जलम जात है बाद, याद कर पीव कूं।

मुस्कल से होतै हैं जीव कूं।

जाकै हिरदै में राम रात दिन रहत है।

अरे हां बाजिंद नहीं मुक्ति में फेर संत सब कहत है।।

अजब ढाल है अक, राम के नाम की।

जो कोई जाणै ढाब, उसी के काम की।

शिव सनकादिक शेष, लगिया इण ओट रै।

अरै हां बाजिंद जम टाळा दे जाय लगै नहीं चोट रै।

घड़ी घड़ी घड़ियाल पुकारत कहत है।

अवध गई है बीत, अल्प सी रहत है।

सोवै कहां गिवांर, भज्यौ नहीं पीव रै।

अरै हां बाजिंद झूठौ है संसार सगौ नहीं जीव रै।

इण तरै और घणां ई संत वहीया जिकौ लोगों नै चेतावण रौ काम करियौ है।

समाज रा राह भटकिया लोगों नै नई अर सही राह दिखाई। अंध विस्वासां सूं बारे काडण रै साथै ही मुगल हमलावरा रा त्रास सूं घबरायोड़ा अर मरतां लोगों ने जीवण री हिम्मत दी। लोगों नै कैयौ कै निडरता सूं जीतां थकां भगती भाव सूं ओत-प्रोत जीवण इज हाचै जीवण है। जिण तरै रोजीना खाणौ खावौ, सिनाण करौ उणी तरै भगती भाव ई रोज करणौ चाहिजै। बै कैयौ भगती री मैमा अपरम्पार है। सत्संग सूं मोटी कोई चीज इण संसार में नी है। अक वाणी में सत्संग री मैमा करतां कैयौ कै -

सतसंगत अमर जड़ी है

जै कोई लाभ लेवै सत्संग रौ

उनकौ ही खबर पड़ी है।

सतसंगत अमर जड़ी है

आगै फेरुं संतजन इण परदेस रा विसयां में बंध्योड़ा अर रागी द्वेषी लोगों नै समझाया कै संसार परिवर्तनशील है, इण संसार में कोई भी चीज थिर नी है। इण वास्तै फालतू लटका मत करौ, ओ संसार क्षण भंगुर है। अक दिन ओ संसार छोड़ सबाने जाणौ है। बै कैयौ कै -

हंसा जाणौ है हम जाणी

बैवै लोभ मोह री नदियां।

डूबोला बिन पाणी

हंसा जाणौ है हम जाणी।।

औरुं उण समै जिकौ मिनख जमारै री कदर नी करता अर इण रे मैतव नै नी समझता उणां नै संत लोग आपरी वाणी सूं समझाया कै औ मिनख जमारौ बार बार नी मिळै -

पुरबलै पुन पावियौ मानुस अवतार।

नहीं है रै प्राणी मानखौ जलम बार बार।।

जिकौ आततायी शासक वरग निरदोस जनता माथै अत्याचार करता अर अनीती करता बांनै ई संत समझाया कै -

अनीती से जात है, राज तेज अर वंस।

तीनूं ताळा दे गया, रावण कैरु कंस।।

जिकौ जवानी रै मद में आय' र गळत काम करै, आपरै बराबर किणी ने ई नीं गिणै वांनै संत जन कैयौ कै आ जवानी थारै हमेशा नी रेवैला, जवानी चार दिन री इज है। आ तौ घरे आयौड़ा पांवणा री तरै है। बै कैवै है कै -

जोबन धन पांवणा दिन चारा।

ज्यांरौ गरब करै सौ गिवांरा।।

संसार ने सांच समझ' र ऊंदा काम करणिया लोगां अर कमजोर आदमियां ने तंग करणियां महाबलियां ने संत लोग समझाया कै ओ संसार साचै नीं है, झूठौ है। आगै जमाना में कैई मोटा-मोटा खपीड़ व्हीया जिका ई गिया परा थारी कांई जिनात है। साहेब अक भजन रै मारफत कैवै कै-

ओ जग झूठौ रै संसार

नर थारी निन्दरा नै परी निवार

ओ जग झूठौ रै संसार

जो नर भाखर तोलता

दिन में कैई कैई वार

बै नर माटी में मिळिया

ज्यांरा भांडा घड़ै कुम्हार

हेर-हेर होनो फेरती

मोत्यां मरती भार

घड़ी अक झोलो बाज्यौ

घर घर री पणियार

ऊघै सोई आथमें

अर जलमे सो मर जाय

चिणिया देवळ ढह पड़ै

हर भज उतरौ पार।।

राजस्थानी समाज में जिका लोग रात दिन कमावणा में इज ध्यान देवै, भगवान री भगती नीं करै। कैण रौ मतलब सुख वास्तै बारै भटकै पण आपरै हिया में ध्यान नी देवै। बांनै संता समझायौ कै-

हेली बायर भटकै कांई

थारै सब सुख है घट मांई

हेली घट रौ ग्यान बिचारौ

मांयै कुण है बोलण वाळौ

राजस्थान रा लोगां माथै आं संता री वाणी रौ बड़ौ जबरदस्त प्रभाव पड़ियौ। वारी ग्यान री बातां अर सुमती सूं राजस्थान में जन जागृति व्ही। राजस्थानी संता रा लोगां ने जगावणा अर हियै में भगती जगावण रौ सैं सूं बड़ौ नमूनौ ओ है कै मीरां जैड़ी जिकी राजधराणै री बीनणी हुय' र ई संता रै प्रभाव सूं नी बच सकी। उण मातै भगती रौ अेड़ौ रंग चढियौ, बा जी जितै नी उतरियौ। मीरां राजधराणौ छोड़' र संता री संगळी में आयगी अर वारै साथै भजन किरतन करण लागी।

अठै अैड़ा कैई संत व्हीया जिका बड़ा बड़ा राजावां नै ई सुधार दिया। वारी अकल ठिकाणै लियाया। उणां मूं अेक संत हा खेड़ापा रा रामदासजी। जिकौ जात रा मेघवाळ हा पण ग्यान अर भगती भाव रे कारणे जोधपुर दरबार ने ई चरणां में माथौ झुकावण ने मजबुर कर दिया। वारी वाणी में बौत प्रभाव हौ इण वास्तै जांधपुर राव ई कदैई वारी बात नी टाळता। आंरी तरै ई टांकला रा किसनदासजी मा' राज हा। वारी रैणी करणी भी बौत उतम ही। अेक औरू संत व्हीया जैपर कन्नै नराणा गांव में दादू दयाल जी मा' राज। अै राजस्थान रा कबीर कैवावै। राजस्थानी समाज ने जगावण में अर उणने भगती भाव कांनी मोड़णा में दादूजी रौ अभूतपूर्व योगदान है। वारै साथै साथै वारा सैकड़ुं चेला ई राजस्थान में जन जागरण रौ काम करियौ। लोगां रै हियै सूं अंधविश्वास बारै काड' र सामाजिक बुराईयां ने मेटी।

अैड़ा अलेखूं संत व्हीया जिकौ आपरै ग्यान रै परकास नै फैलायौ अर समाज में फैल्यौड़ा अग्यान रूपी अंधारा नै मेटियौ। भगती भाव रा बीज रोपिया। गुरु री अर सत्संग री मैमा बतायी। वारै प्रभाव सूं राजस्थानी समाज वास्तव में व्यापक स्तर माथै जागौ अर लोग मिनखपणै सूं जीवण बीतावण लागा।

राजस्थान रा जन जागरण में संता रा योगदान नै कदैई नीं भुलायौ जाय सकै।

सब संता नै कोटी-कोटी प्रणाम

संदर्भ सूची

1. कबीर वाणी संग्रह - महंत हजारीदास, श्री सरस्वती प्रकाशन, अजमेर 2004।
2. श्रीदादूवाणी - श्री स्वामी जीवानन्दजी दादूपंथी, गजानंद स्वामी प्रकाशक, जयपुर, 2005।
3. अनुभव बाणी- पुरुषोत्तमदास रामस्नेही, खेड़ापा, चोपड़ा ऑफसेट प्रिंटर्स, जोधपुर वि.सं. 2018 ।
4. पाण्डेय, रामखेलावन, मध्यकालीन संत साहित्य, वाराणसी : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, 2005।